कश्मीरी लिपि-चिह्न : एक ऐतिहासिक निर्णय

रतनलाल शांत

हमारे पाठक भील भांति जानते हैं कि कश्मीरी के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग करने की विभिन्न स्थानों पर की जा रही कोशिशों को एकरूप बनाने के लिए कॉशुर समाचार दिल्ली, कश्यप समाचार (अब क्षीर भवानी टाइम्स, जम्मू) तथा श्रीनगर, चण्डीगढ़, कलकत्ता, बंबई, अलवर मैसूर, पुणें आदि स्थानों की संस्थाओं तथा वहां रह रहे भाषाविदों ने इधर काफी विचार विनिमय किया । व्यक्तिगत मतों को दिल्ली और जम्मू की पत्रिकाओं में समय समय पर प्रकाशित भी किया जाता रहा । इसी उद्देश्य से गत दिसंबर में दिल्ली में कई महत्त्वपूर्ण बैठकें हुई जिनमें अंतत: यह भ्रम 'विकल्प' के मंत्री को सौंपा गया । उन्होंने जम्मू तथा दिल्ली के प्रतिनिधि लिपिविदों की राय को समेकित रूप देने के लिए समिति का गठन किया जिसके सदस्य थे : सर्वश्री शंभुनाथ भट्ट 'हलीम', चमनलाल सप्रू रतनलाल शांत तथा स्वयं मंत्री हरिकृष्ण कौल । समिति ने पूर्व सब मतों का तथा विभिन्न मंचों में प्रकट किए गए विचारों का अकलन किया तथा कुछ निष्कर्ष निकाले जो इस प्रकार हैं :

1. कश्मीरी भाषियों के लिए यह समय बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने अब यह करीब तय किया है कि उन्हें अपने भाषा साहित्य तथा संस्कृति की रक्षा के लिए नागरी लिपि को ही अपनाना होगा, क्योंकि यह लिपि ही अखिलभारतीय स्तर पर कश्मीरी-भाषियों को जोड़ने में सक्षम है ।

2. विभिन्न विद्वानों तथा सम्बद्ध संस्थाओं के कश्मीरी के लिए नागरी लिपि को अनुकूलित करने के अब तक के प्रयास इस बात का संकेत करते हैं कि इस लिपि की उपयोगता के बारे में सब एकमत हैं और इसे एक ही रूप देने को आतुर हैं ।

3. नागरी को एकरूप देते हुए हमें ध्यान में रखना होगा कि जो अतिरिक्त चिह्न हम अपनाएं, वे यथासंभव सरल हों, पूर्व प्रचलित हों, अधिकांश लेखकों पाठकों को विदित हों तथा वैज्ञानिक हों । सब से बढ़कर वे कश्मीरी की वर्तनी के उपयुक्त हों ।

4. नए सिरे से नए चिह्न बनाना या उनको ढलवाना सम्प्रति संभव नहीं, क्योंकि नागरी में छपने वाली कश्मीरी पुस्तकों की संख्या अभी नहीं के बराबर है । न ही हमें किसी मुद्रक के पास पहले से तैयार किसी चिह्नावली के अनुसार अपने चिह्न अनुकूलित करने चाहिए । हम उन ही चिह्नों का प्रयोग करेंगे जो सर्वाधिक प्रचलित हैं । इनमें "कॉशुर समाचार" तथा "क्षीरभवानी" में प्रयुक्त चिह्न विशेष महत्त्व रखते हैं ।

5. टाइपराइटर तथा कंप्यूटर पर मौजूद चिह्नों के साथ हमें अपने प्रस्तावित चिह्न मिलाकर निर्णय लेना होगा ।

6. एक परिनिष्ठित लिपि को एक से अधिक भाषाओं के लिए प्रयुक्त करते समय जो भी चिह्न प्रयोग में लाए जाते हैं वे वस्तुत: संशोधक (मॉडी फायर) ही होते हैं, जो एक भाषा के स्वर को दूसरी भाषा में दूसरे स्वर का उच्चारण प्रदान करते हैं । एक ही संशोधक द्वारा हिंदी के स्वरों को कश्मीरी के स्वरोंमें बदलने के लिए कभी अर्धचंद्र (ॅ) तथा कभी अपास्ट्रॉफी (') का प्रयोग किया गया है । इस से इस लिपि को कुछ लेखकों ने सरलता से अपनाया पर अधिकांश ने इन चिन्हों का अनावश्यक और अनियंत्रित प्रयोग करके संशोधक की सटीकता पर ही प्रश्न चिह्न लगाया है । इसलिए तय हुआ कि कोई एक ही संशोधक प्रयोग में लाने की अपेक्षा दो तीन चिह्न इस्तेमाल किए जाएं जो स्वर-युग्मों में काम आ जाएं । यह देखते हुए अर्धचद्र, अपास्ट्रॉफी तथा एक पुराने चिह्न ـــ ऽ ـــ का प्रयोग करने पर सहमति हुई । इस प्रकार कश्मीरी की स्वरमाला निम्नलिखित होगी :

अ, आ अऽ, आऽ, इ ई, उ, ऊ, उ॑, ऊ॑, ए', ए, औ', ओ, अं ।

व्याख्या :

अ = अगर, पछ, मठ, कमल

आ = आर, डास आराम, पगाह

अऽ = अऽछ (आंख) बऽड (बड़ी) रऽछ (राखी)

आऽ = आऽस (मुंह) छाऽर (जल्दी) अकाऽय (एक ही)

इ = यिवान, छलिछलि, म्यानि बायि

ई = यीच, बीठ, मची ! (पगली !)

उ = वुस, रुत, चुक, मनुश (मनुष्य)

ऊ = कूत, श्रूच, सूंठ, क्रूद (क्रोध)

उ॑ = बु॑ (मैं) चु॑, नतु॑ (नहीं तो) बतु॑ (भात) कथु॑ (बातें)

ऊ॑ = कूॅत्य् ? (कितने) तूॅर (सर्दी)

ए' = मे' (मुझे), चे', बे'ह (बैठो), चे' (पियो), बे' मंदछ (बेशर्म)

ए = सेर, नेब, गेरु॑ (घेरा), केलु॑, नेथु॑र (विवाह)

ओ' = ओ'ड (आधा) ओ'दुर (गीला), नो'ट (घड़ा), अको'र (नहीं किया हुआ)

ओ = नोर, ओट, गोस (मैं गया) अपोर (उस पार)

अं = गंडु॑ (प्याज़) रंबुॅवुन (सुंदर) कंऽड (छिलका), शोंठ

7. इन के अतिरिक्त कश्मीरी में दो अर्धस्वर हैं जो हिंदी में भी उसी तरह प्रयुक्त होते हैं इसलिए उन के लिए अलग चिह्न नहीं हैं—

—य = क्याह ?, ब्याख, र्‌यन (ऋण), र्‌यथ (महीना) ट्‌यो'क (टीका)

—व = क्वस ?, स्वछ, न्वश, ब्वछि, द्‌वल, र्‌वपय, श्वंडु॑ स्वर

8. शब्दांत तालव्य हो तो अर्धस्वर 'य' को हलन्त किया जा सकता है :

—य् = कूॅत्य् (कितने) मूॅत्य् (साथ) राऽव्य् (वे खोगए) रुत्य् (अच्छे) बुथ्य् (चेहरे)

9. कश्मीरी के व्यंजन इस प्रकार हैं :

क, ख, ग, च, च़, छ, छ़, ज, ज़

ट, ठ, ड, त, थ, द , न

प, फ, ब, म, य, र, ल, व

श, स, ह ।

10. कश्मीरी में सघोष महाप्राण व्यंजन, कंठ्य, वर्त्स्य और तालव्य अनुनासिक और संयुक्त और व्यंजन क्ष तथा ज्ञ नहीं । अर्थात् :

घ, झ, ढ, ध, भ, ङ, ञ, ण, क्ष, ज्ञ नहीं है । त्र व्यंजन-गुच्छ है जो प्र, क्र, ट्र की तरह बनता है ।

11. ऊपर सं. '10' में रेखांकित व्यंजन तथा हिंदी के अकश्मीरी स्वर अर्थात ऋ, ऐ, औ तथा विसर्ग केवल व्यक्तिवाचक नामों में प्रयोग किये जाएंगे । जैसे :

कृष्ण, वैकुंठ नाथ, दौलतराम, रघुनाथ, झारखंड, धनवती, भोपाल, नारायण, क्षमा, यज्ञदत्त

नामों का कश्मीरी करण करते समय उनके महाप्राण वाले रूप को बनाए रखा जाएगा और बीच में यथा-उच्चरित स्वर डाल दिए जाएंगे । जैसे : कृष्णु॑ जुव, वैक्वंठ नाथ, रवघुनाथ, धनुवती, पर ऐसा केवल उस नाम वाले व्यक्ति को अपात्ति न होने की स्थिति में किया जाएगा ।

इस स्वरचिह्नावली और वर्तनी के बारे में पाठकों की राय अपेक्षित है । पर राय शीघ्र हो तो उस की समीचीनता पर विचार करके इन नियमों को अंतिम रूप दिया जा सकेगा ।

टिप्पणी : 'क्षीरभवानी' में अभी अगले दो तीन अंकों में वर्तमान लिपिचिह्न (') ही का प्रयोग होता रहेगा उसके बाद नई चिह्नावली प्रयोग में लाई जाएगी ।

क'शिरि आवाज़ु'

स्वर :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, अं । अ' = ग'र, च'र ब्य'च । आ' = आ'र, नसा', ज़ा'र ।
उ' = खु', चु', नतु', कथु' । ऊ' = ऊ' ठ्युम, तू'र, कू'त्य् । ए' = मे', चे', बे'ह, कें'ह ।
ओ' = ओ'र, दो'र, नो'ट, दो'प '। —य् = तीत्य्, कु'त्य्, कु'त्य्, म्या'न्य् आ'च्य् ।

व्यंजन :

क, ख, ग, च, छ़, ज, छ, ज़, ट, ठ, ड, त, थ, द, न प, फ, ब, म, य, र, ल, य, श, स, ह ।

हिंदियिक्य् अलावु' स्वर ऋ,ऐ, औ तु' व्यंजन घ, झ, ढ, ण, ध, भ, ष, क्ष, ज्ञ कख अ'स्य् सिरिफ नावन (व्यख्ती वाचक संग्यायन) मंज इस्तिमाल । मसलन कृष्ण, मैनावती, दौलतराम, घनश्याम, झारखंड, धनवती, भास्कर लक्ष्मण, ज्ञानेश्वर, ऋषिकेश वगा'रु' ।